केवल निजी वितरण के लिए

dqN viuh dqN tx dh

बच्चो का अपना अखबार

जनवरी 2008

हमारा सपना–
हमारे बड़े हमारी नजरों से दुनिया देखने की एक सकारात्मक और ईमानदारीपूर्ण कोशिश करें!

बच्चो की ओर से

हम सब बच्चे देखते हैं कि परिचय का एक अखबार निकलता है। अब हम सब को भी पढ़ना–लिखना आ गया है इसलिए हम नए साल में अपना एक अखबार निकाल रहे हैं जिसमें हम अपने आस पड़ोस, देश और दुनिया में होने वाली अलग–अलग घटनाओं को शामिल करेंगे। इसमें मजेदार जानकारियां होंगी और अलग अलग विषयों पर बच्चो के विचार भी होंगे। अखबार निकालने से हमारी सोच भी बढ़ेगी। इस अखबार को शुरू करने के लिए हमने कई मीटिंग की। इस अखबार के अलग–अलग नाम सोचे और आखिर में तय किया गया कि इसका नाम होना चाहिए "कुछ अपनी कुछ जग की।"

– मोनी

हमारा प्रयास आपको कैसा लगा!
अपनी राय जरूर भेजिए!
–परिचय के बच्चे

गाँव की खुशबू

हरी चिरैया तोता ताई
कान में धरि के पैसा लाई
अम्माँ–अम्माँ कहाँ धरऊँ
धर दे बेटा घास में
ब्याहो करौं बैसाख में।
!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!
कल्लू कर कोल कोल
कल्लू की अम्माँ गोल–गोल
घूरे पै कनकइया नाचै
कल्लू कहै मेरी अइया नाचै।
!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!
जाड़ो आओ जाड़ो आओ जड़े पुरी
जाड़े की अम्मां ने करी पुरी
खाए लेओ लला दोय अउर धरी।
!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!
अरंडी के तेल में करे पुआ
खाए भतीजी मरे बुआ।

राधा मैनपुरी की रहने वाली है और उसने अपने देहाती लहजे में जब ऊपर लिखी पंक्तियां सुनाई तो सभी ने गाँव की मिट्टी की खुशबू के साथ वहाँ की उन्मुक्तता और सरलता का रसास्वादन किया।

"PARICHAY" 204-A, Pocket J&K, Dilshad Garden, Delhi. Ph. 9810753425

नया साल और हमारे इरादे

इस बार मैंने सोचा है कि मैं खूब पढ़ूंगी और सहेलियों के साथ ज्यादा नहीं रहूंगी। जो पैसे चीज खाने के लिए मिलेंगे उसे जमा कराऊंगी ताकि वो पैसे आगे चलकर मेरे किसी काम आएं।

–मोनी

मैं अपने होशो हवाश में कह रही हूं कि मैं इस नए साल में कम खाऊंगी और मैं अपनी कहानी जरूर लिखूंगी।

– राधा

मैं चाहती हूं कि नए साल में इतना कुछ सीख जाऊं कि इस साल मैं सिलाई टीचर बनकर नए सेंटर पर जाकर वहां के बच्चो को सिखा सकूं। वहां के बच्चो को सिखाते हुए मुझे भी अच्छा लगेगा।

– रानी

कृष्णा सर और उनकी पत्नी से मुलाकात

कृष्णा सर और उनकी पत्नी से मिलकर हमें बहुत अच्छा लगा, मेरे दोस्तों (कैलाश, राजू, सन्नी, अजहर और इस्तकार) ने उनके लिए बहुत अच्छा नाटक तैयार किया था। हमने यह नाटक दो ही दिनों में तैयार कर लिया था। हम चाहते तो यह नाटक एक दिन में ही तैयार कर सकते थे। लेकिन कृष्णा भइया और भाभी को यह नाटक याद रहे इसलिए हमने दो दिन लगाए जिससे उन्हें याद रहे कि परिचय के बच्चो ने कितना अच्छा नाटक तैयार किया।

लेकिन मुझे इस बात का अफसोस है कि कृष्णा भइया को तो हिन्दी आती है इसलिए वह हमारा नाटक समझ गए होंगे लेकिन भाभी को तो थोड़ी सी भी हिन्दी नहीं आती है तो शायद वह हमारा नाटक ठीक से नहीं समझ पाई होंगी।

कृष्णा सर जब जाने लगे तो हमारा दिल नहीं था कि हम उन्हें बंगलौर जाने दें लेकिन उनका कारोबार तो बंगलौर में ही है इसलिए हम सब ने उन्हें जाने दिया। जाते समय कृष्णा सर ने वादा किया कि वह हर साल परिचय आया करेंगे। हमारी यही कोशिश रहेगी कि जब कृष्णा भइया और भाभी वापस आएं तो हम अंग्रेजी में नाटक दिखा सकें।

– चाँद

प रि च य

परिचय – जागी आँखों का इक सपना
परिचय – बच्चों का जहां अपना
परिचय – बच्चों का बचपन से
परिचय – बच्चों का रंगों से
परिचय – बच्चों का जीवन से
परिचय – नारी का शक्ति से
परिचय – मानव का मानव भक्ति से
परिचय – कदमों का मंजिल से
परिचय – अपनों का अपनों से
परिचय – सपनों का सपनों से

बिल्डिंग में भूत

सोमवार की रात साढ़े आठ बजे की बात है मैं और तरन्नुम पानी भरने के लिए नीचे गए हुए थे कि अचानक मुझे एक आवाज सुनाई दी और मैं डर के मारे तरन्नुम से चिपक गई। तभी तरन्नुम बोली मोनी क्या हुआ? मैंने कहा,''तुझे अजीब सी आवाज सुनाई दी है क्या? उतने में ही वह आवाज दुबारा आई। मैंने कहा अब आवाज सुनाई दी तुझे तरन्नुम।'' तरन्नुम ने कहा – ''हाँ मुझे भी सुनाई दी है।''

और तरन्नुम भी डर गईं और बोली – ''भाग मोनी, भाग यह तो भूत की आवाज है।'' भागते–भागते हम दोनों बरामदे में जा पहुंचे। हम दोनों वहीं रूक कर कपड़ों के पीछे से झांकने लगे। तभी वहां पर रानी आ गई और बोली – ''तुम लोग यहाँ पर क्या कर रहे हो।'' हमने सारी बात उसे बताई तो वह बोली –''पागल हो, वह तो भैंस है। उसे यहाँ भागीरथ के मामा ने बाँध दिया है।''

–मोनी

बच्चो की नजरों से दुनिया देखना उतना कठिन नहीं होता जितना हम समझते हैं। उनके नजरिए के प्रति सकारात्मक सोच बना कर हम उनसे करीबी रिश्ता बना सकते हैं।

– विजय बाजपेई

जब मैं मेले में खो गई

जब त्योहारों का मौसम होता है तो जगह–जगह मेले लगते हैं। एक दिन की बात है मेरे भइया ने बताया कि चाँदबाग में मेला लगा है। तब मेरा मन मचलने लगा। मैं बार–बार अपने माता–पिता से कहती थी कि मुझे मेले में ले चलो। फिर वे परेशान होकर मुझे मेले में ले गए।

जब मैं मेले से थोड़ी ही दूर थी तो मेले के बल्बों की रोशनी वहां तक आ रही थी। मैं भागते हुए मेले के अन्दर पहुंची तो देखा एक तरफ झूले लगे थे और एक तरफ तरह–तरह के खेल–खिलौने लगे हुए थे। एक जगह खूब सारे खिलौने बिक रहे थे। वहाँ पर बंदर ढोल बजा रहा था और गुड़िया नाच रह थी। तब मेरे माता–पिता आगे चले गए, मेरा ध्यान खेल –खिलौनों की तरफ था। जब गुड़िया ने नाचना बंद कर दिया और बंदर ने ढोल बजाना बंद कर दिया तो मैं मुड़ी और मैंने देखा कि मेरे घर वाले कोई भी नहीं हैं। मैं रोने लगी, सिसकी मार–मार कर रोने लगी। और सारे खिलौने भी फेंक दिए। फिर मुझे रूकसार मिली और वह मुझे घर ले गई।

–तरन्नुम

बच्चा अपने विकास के लिए आवश्यक तमाम शक्तियों के साथ ही इस दुनिया में कदम रखता है परंतु उसके जीवन के पहले 12 सालों में उसका परिवार ही उसके लिए सबसे अधिक महत्वपर्णू होता है।

–विजय बाजपेई

माँ

काश मेरी माँ होती तो कितना अच्छा होता। माँ होती तो अच्छे–बुरे का ज्ञान कराती। अगर आज मेरी माँ होती तो मुझे कोई कुछ नहीं कहता। कई बार कुछ बातें समझ में नहीं आती हैं तो लोग कहते हैं कि यह लड़की तो पागल है, पता नहीं इसकी माँ ने इसे क्या सिखाया है। मैं कहती हूं कि जब मेरी माँ ही नहीं है तो मुझे सिखाएगा कौन कि अच्छा क्या है और बुरा क्या है।

मुझे तो माँ का प्यार ही नहीं मिला लेकिन मैंने अपनी सहेलियों की माँ का प्यार पाया है। मुझे तो कुछ पता नहीं था कि माँ का प्यार क्या होता है। माँ तो देवी का रूप होती है। माँ हमें जन्म देती है, वो हमें अच्छे–बुरे के बारे में बताती है। जैसा प्यार माँ से हमें मिलता है वैसा किसी और से नहीं मिलता। जब कोई मुझे रूलाता है तो मुझे माँ की याद आती है। आज मुझे माँ की बहुत याद आ रही है क्योंकि आज माँ के बारे में लिखा है।

– राधा

प्रौढ़ शिक्षा

हमारे सेंटर पर जो औरतें मसाला और अचार बनाती हैं उन्हें पढ़ना–लिखना नहीं आता है। उनको बहुत दिक्कत आती है। वे जल्दी से तराजू के नंबर नहीं पहचान पाती हैं, जो उनके लिए और परिचय के लिए बड़ी दिक्कत की बात है। सरजी ने सोचा कि अगर मैं नहीं आऊं तो इनका काम कैसे होगा, बच्चे भी पढ़ाई के समय अपनी कक्षाओं में होते हैं, इसलिए औरतों की मदद उस समय नहीं कर सकते। इसलिए उनको पढ़ने–लिखने की जरूरत है। हम बच्चो को भी बहुत अच्छा लगेगा यदि ये पढ़ना–लिखना सीख लेंगी। पढ़–लिखकर ही अपने बच्चो को कुछ पढ़ा सकती हैं। और तराजू के नंबर, चीजों के दाम भी पहचान सकेंगी। और सेल पर जाने में भी कोई दिक्कत नहीं होगी।

यह सब समझते हुए औरतों ने पढ़ना–लिखना सीखना शुरू कर दिया है। सरजी और बच्चो को भी बहुत अच्छा लगा। आशा है कि पढ़–लिखकर ये औरतें जीवन में आगे बढ़ेंगी।

– बुलबुल

मेरा सपना : पुलिस

मैं बड़ा होकर पुलिस बनना चाहता हूँ। लेकिन मैं बाकी पुलिस वालों की तरह नहीं बनूंगा और सभी गरीबों की सहायता करूंगा। अगर मेरे को कोई रिश्वत देगा तो मैं उसके हाथ पकड़ कर कान के जबड़े में दो रैपट मारूंगा और वह पुलिस वाले को रिश्वत देना भूल जाएगा। मैं अपने देश के लिए जान भी कुर्बान कर दूंगा।

– राजू

अक्टूबर महीने की बाल सभा

अक्टूबर 2007 दिन बुधवार को 2 बजे परिचय की मासिक बाल सभा हुई। बच्चो ने कविता, गाने और कहानियां सुनाई। बाल सभा में सरजी ने सब बच्चो को बताया कि नवरात्रि, दशहरा, दीपावली और ईद क्यों मनाए जाते हैं। इन त्योहारों को मनाने का सही तरीका भी सरजी ने हम सबको बताया। मुस्तकीम अंकल ने ईद के बारे में हम सबको बहुत सी जानकारियां दीं। इस दिन हमारे सेल्वा भइया का जन्मदिन भी था। सब बच्चो ने मोबाईल पर उनको मुबारकबाद दी। वैसे तो बाल सभा वाले दिन सभी बच्चो को कुछ न कुछ ईनाम मिलता ही है मगर सेल्वा भइया के जन्मदिन पर उन्होंने बच्चो के लिए खीर और वैजिटेबल बिरयानी बनवाई थी। बच्चो ने पकवानों का आनन्द लिया। कुछ बच्चो ने बाल सभा में कुछ भी नहीं सुनाया। उनको ताकीद दी गई कि वे अगले दिन कक्षा में मैडम को कुछ न कुछ जरूर सुनाएं।

– *रूकसार*

आओ बच्चो तुम्हें बताएं

♦झींगुर की झनकार से सही तापमान मालूम किया जा सकता है।

♦अगर टिड्डे की पूंछ उसके मुँह तक पहुँच जाए तो वह खुद को ही खा जाएगा।

♦किसी औरत की लंबाई कितनी हो सकती है? सोचिए तो .हिसार के एक गाँव में साढ़े आठ फुट लंबी औरत की हड्डियों का ढाँचा मिला है। यह औरत हड़प्पा काल की है।

मोबाइल के लिए जान दे दी

दीपू के पिता एक कबाड़ी की दुकान में काम करते हैं। उसकी मम्मी घरों में काम करती हैं। उसके दो भाई और एक बहन है जो कि सरकारी स्कूल में पढ़ते हैं। दीपू ने अपने मम्मी–पापा से कहा कि मुझे मोबाइल दिला दो। तो उसके मम्मी–पापा ने कहा कि हमारी ऐसी हैसियत नहीं है कि हम तुझे मोबाइल दिला सकें। उसके माता–पिता ने उसे एक सस्ता मोबाइल दिला दिया। उसे वह पसंद नहीं आया। उसने जिद की कि मुझे तो कैमरे वाला मोबाइल ही चाहिए। उसकी मम्मी ने उसे समझाया कि हमारी हैसियत नहीं है कि हम कैमरे वाला मोबाइल खरीद सकें।

उसने कमरे में जाकर डैक बहुत तेज आवाज में चला दिया। पड़ोसियों ने उसकी मम्मी से कहा कि दीपू से आवाज कम करने के लिए कहो। उसकी मम्मी ने उससे डैक की आवाज कम करने के लिए कहा पर उसने आवाज कम नहीं की। उसने दरवाजा अन्दर से बंद कर लिया। उसकी मम्मी और बहन घर के काम में लग गई। दीपू के कमरे में मेज के पास मिट्टी का तेल रखा था, उसने पहले जलने की कोशिश की परंतु वह जलने में नाकाम रहा। उसे एक रस्सी मिली। उसने मेज पर चढ़ कर रस्सी का फंदा बना कर फांसी लगा कर अपनी जान दे दी। घर में किसी को इस बात का पता ही नहीं था। उसकी माँ ने खिड़की से देखा तो उसके होश उड़ गए।
मैं सोचती हूं कि क्या जीवन एक मोबाइल से सस्ता हो गया है। इस तरह की घटना के लिए जिम्मेदार और दोषी कौन है?

– *रानी*

6

श्रीमती संपूर्ण जीत – एक समर्पित व्यक्तित्व

सीधा, छरहरा शरीर, सन से सफेद बाल, जीवन एवं परिस्थितियों के प्रति सकारात्मक सोच को स्पष्ट दिखाती आँखें, चेहरे पर शिशु सा निश्छल भाव और ओठों पर स्मित मुस्कुराहट – एक अप्रतिम छवि जिसे निहारते नज़र कभी न थके, ऐसे अनोखे व्यक्तित्व का नाम है – श्रीमती संपूर्ण जीत।

पिछले 8 वर्षों से आराधना अभिभावक समूह (मंद बुद्धि व्यक्तियों के लिए कार्यरत संस्था) और परिचय की शुभचिंतक और उसका एक महत्वपूर्ण स्तम्भर संपूर्ण जीत का जीवन प्रेरणा का महान श्रोत है। हर पल कुछ नया और रचनात्मक करने की उनकी ललक युवाओं को भी अचंभित कर सकती है। अब तक अनेकों जीवनों को नये आयाम देने वाली संपूर्ण जीत इसके प्रति अनभिज्ञ बने रहना ही पसंद करती हैं। मित्रता के लिए आमन्त्रण देती उनकी मुस्कुराहट और गर्म जोशी से उनका हाथ मिलाना आज पाँच वर्षों के बाद भी वैसा का वैसा याद है। बहुत ही कम समय में मेरी सोच उनकी सोच से और उनकी जीवन दृष्टि मेरी जीवन दृष्टि से ऐसे परिचित हुई जैसे दो व्यक्ति चिर परिचित हों। और दो ह्रदय समरस होते होते एकाकार हो गए। जिसके परिणाम स्वरूप Harmonious Parenting पुस्तक अस्तित्व में आई फिर सद्भावना और अब Harmonious Parenting का हिंदी संस्करण शीघ्र ही पाठकों के हाथों होगा।

श्रीमती संपूर्ण जीत एक अत्यंत सक्रिय समाज सेविका हैं। उनकी सभी गतिविधियाँ शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने तथा बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए माता–पिताओं को परामर्श एवं सहयोग देने से संबंधित है।

श्रीमती जीत ने दिल्ली पब्लिक स्कूल, मथुरा रोड़ में 1952 में अध्यापन आरंभ किया और वे 28 वर्षों तक सोशल स्टड़ीज विभाग की अध्यक्षा रहीं। उन्होंने एक वर्ष नोवा हाईस्कूल, एफ़टीलाडरेल, लोरिडा, यू. एस. ए. तथा मेलबोर्न के एक पब्लिक स्कूल में भी पढ़ाया। वे दो वर्ष एकेडमी स्कूल न्डोला, जाम्बिया में प्रिंसिपल के पद पर रहीं।

भारत वापस आने पर उन्होंने अपने अनुभव का प्रयोग करते हुए पेरेंट्स फोरम फॉर मीनिंगफुल एजुकेशन की स्थापना की। इस संस्था के माध्यम से सी. बी. एस. ई. की परीक्षा प्रणाली में सुधार लाने के उनके प्रयास अभूतपूर्व रहे। उनके द्वारा पेरेंटल काउंसलिंग के अन्तर्गत तैयार किया गया मनोवैज्ञानिक कोर्स 'न्यू डाइमेंशन इन चाइल्ड एजुकेशन' एन. सी. ई. आर. टी. द्वारा पुरस्कार के लिए चुने गए सर्वोत्तम कोर्सेज में से एक चुना गया।

सद्भावना, एक आभियान, हारमोनियस पेरेंटिंग उनकी सफल प्रकाशित रचनाएं हैं। जिन्हें पाठकों द्वारा भरपूर सराहना मिली। नृत्य, गान, अभिनय द्वारा बच्चों के स्तर पर आकर बच्चों को शिक्षित करने व उनमें जीवन के प्रति सकारात्मक सोच विकासित करने का उनका गुण शिक्षा क्षेत्र में कार्यरत सभी व्याक्तियों के लिए अनुकरणीय उदाहरण है।

उम्र के जिस पड़ाव पर लोग निष्क्रिय होकर दूसरों पर आश्रित हो जाते हैं वहाँ संपूर्ण जीत की सक्रियता, रचनात्मकता, हर पल कुछ नया करने की जिजीविषा अचंभित करते हुए जीवन के प्रति एक सकारात्मक सोच व तरीका अपनाने का प्रेरणा श्रोत हैं।

भाषा – क्यों पिछड़ रहे हैं बच्चे

भाषा – मानव जीवन शायद जिसके बिना अधूरा सा है। वही भाषा, उसकी लिपि सीखने में हमारे प्राथमिक विद्यालयों के हजारों विद्यार्थी जूझ रहे हैं और विफल हो रहे हैं। यदि एक बच्चा साधारण रूप से एक भाषा बोलना सीख सकता है तो फिर प्रत्यक्ष रूप से पढ़ाए जाने पर भी उसे लिखना सीखने में इतनी कठिनाई क्यों होती है? यह एक ऐसा प्रश्न है जिससे प्राथमिक शिक्षा से जुड़ा हर कोई व्यक्ति बच नहीं सकता। भाषा के इसी परिदृश्य से जुड़े कुछ सवाल ये भी हैं :

एक नगर निगम प्राथमिक विद्यालय के आधे से अधिक बच्चों को हिन्दी पढ़ना–लिखना नहीं आता। इसके पीछे के कारणों की यदि खोज की जाए तो हमें शिक्षक – शिक्षिकाओं के उदासीन रवैये के अलावा भी अनेकों वजह दिखाई देंगी। क्या इतने बड़े अनुपात में विद्यार्थियों की भाषा अर्जन की विफलता, भाषा शिक्षण के पारंपरिक तरीकों की विफलता के ओर इशारा नहीं करती? जिस तरह से हमारे विद्यालयों में भाषा शिक्षण हेतु एक क्रमबद्ध तरीके से तथाकथित सरल से जटिल की ओर बढ़ने के नियम को अपनाया जाता है (पहले अक्षर, फिर बिना मात्रा वाले शब्द, फिर मात्रा वाले शब्द), कहीं यह पद्धति ही लिखने पढ़ने के कौशल के विकास में बाधा तो नहीं है? शायद इस प्रश्न और इसके उत्तर को हमें सिरे से अपने विद्यालयों में परखने और प्रयोग करने की आवश्यकता है।

दूसरी ओर ध्यान देने वाली बात यह भी है कि जो हिन्दी हमारी कक्षाओं में पढ़ाई जाती है, किताबों में प्रयुक्त होती है उस हिन्दी व ध्वनियों के उच्चारण में अक्सर हमारे विद्यार्थियों की सामाजिक – सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में मेल नहीं होता। उदाहरणार्थ – जब शिक्षिका 'स' की ध्वनि से शुरू होने वाले शब्द बच्चों से पूछती हैं तो बच्चे जवाब देते हैं 'सलजम'। यहां इस स्थिति में शिक्षिका की क्या प्रतिक्रिया हो ? इन विद्यार्थियों की नजर में तो उन्होंने सही शब्द ही सुझाया है क्योंकि उनके घर में मां, दादी सभी 'शलगम' को 'सलगम' ही कहते हैं।

इसके अतिरिक्त हमें इस बात को लेकर भी सजग रहना चाहिए कि हमारे अधिकांश विद्यार्थियों के पास सिवाय पाठ्यपुस्तकों के शायद ही कोई अन्य पुस्तक उपलब्ध होती है। यह स्थिति अप्रत्यक्ष रूप से भाषा–विकास को प्रभावित करती है। चूंकि जितना अधिक लिखने–पढ़ने की सामग्री की उपलब्धता होगी और उसके अनुभव के अवसर होंगे, भाषा सीखने (लिखने–पढ़ने) की गति भी उतनी ही तेज़ होगी। यदि आज न केवल तीसरी बल्कि चौथी – पांचवी कक्षा के विद्यार्थी भी ढंग से हिन्दी पढ़ने लिखने में असमर्थ हैं तो इस स्थिति में कहीं न कहीं उपरोक्त दिए गए सभी कारणों का हाथ है।

यहां केवल सरकारी प्राथमिक विद्यालयों तथा हिन्दी भाषा के बारे में बात की जा रही है। भाषा का प्रयोग हिन्दी भाषा के लिए किया जा रहा है।

–प्रीति चौहान, बी. एल. एड. अन्तिम वर्ष

अनुभूतियां

मैं पहली बार "परिचय" केन्द्र पर इंगलिश स्पीकिंग कोर्स में दाखिला लेने गई थी। इंगलिश स्पीकिंग कोर्स करते हुए मुझे कुछ ही समय हुआ था कि श्री विजय बाजपेई ने मुझसे कहा – "मैं आपको पढ़ाता हूँ आप इन गरीब बच्चों को पढ़ा दीजिए।" इंगलिश स्पीकिंग कोर्स करते समय मैं इन बच्चों से मिलती रही थी तथा मुझे यह अनुभव हो चुका था कि इन बच्चों में पढ़ने–लिखने की गहरी इच्छा है। और इस तरह मैं परिचय से जुड़ गई। जब मैंने इन बच्चों को पढ़ाना शुरू किया तो मैंने पाया कि इन बच्चों की जीवन के प्रति कोई सकारात्मक सोच नहीं थी, निजी साफ–सफाई के बारे में भी ध्यान नहीं देते थे, कक्षा में कैसे बैठा जाता है और आने वाले व्यक्ति का अभिवादन कैसे किया जाता है इन सब बातों से ये अनजान थे। आज परिचय के बच्चे किसी भी अच्छे स्कूल के बच्चों से अधिक अनुशासित हैं और स्वयं ही केन्द्र की देखभाल करते हैं। बच्चों के माता–पिता भी तन–मन से हमें सहयोग देते हैं। मुझे लगता है मैं एक विशाल परिवार का हिस्सा बन गई हूँ। मैं पिछले तीन सालों से यहाँ बच्चों को पढ़ा रही हूँ और खुद रोज ही कुछ न कुछ नया सीखती हूँ।

–सुम्मी, परिचय शिक्षिका

मैं तीन साल पहले "परिचय" परिवार से जुड़ी। परिचय के अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम से अब तक लगभग 150 बच्चे लाभान्वित हो चुके हैं। बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के अलावा यहाँ हम बच्चों में उच्च नैतिक मूल्यों की स्थापना करने का प्रयास करते हुए उनमें कला के प्रति रूझान पैदा करते हैं। हमारे बच्चे अपने कोमल हाथों से बड़ी लगन और मेहनत से कई कलात्मक वस्तुएं बनाते हैं। सबसे अधिक खुशी तब होती है जब हम यह देखते हैं कि केन्द्र पर आने वाले बच्चे उन बच्चों को पढ़ाते हैं जो दिन में काम करने के कारण केन्द्र पर नहीं आ पाते।

मुझे इन बच्चों के साथ काम करने में बहुत आनन्द मिलता है क्योंकि ये बच्चे बहुत प्यारे हैं। इन बच्चों के साथ समय कैसे बीत जाता है इसका पता ही नहीं चलता। इन बच्चों के माता – पिता से हमें जो प्रेम और आदर मिलता है उसे शब्दों में बता पाना कठिन है।

–रेखा नेगी, परिचय शिक्षिका

परिचय संस्था का उद्‌देश्य बहुत ही अच्छा व दूरगामी है। यहां पर यह छोटी सी कोशिश बहुत ही सकारात्मक कदम है। बड़ी ही ईमानदारी व परिश्रम से काम करने की प्रेरणा मुझे मिलती है। बिना पिटाई व डर के बच्चों को सिखाना यह बहुत ही अच्छी कोशिश है और प्रेरणा भी। मेरी सद्‌भावनाएं व दुआएं 'परिचय' के सदस्यों के साथ हैं।

–छाया, समुदाय निगरानी समूह

बच्चे निश्छल भाव से संसार में व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक सभी गुणों के साथ प्रवेश करते हैं। शिक्षकों का कर्तव्य है कि वे बच्चों के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह ईमानदारी से करें। शिक्षकों व छात्रों के बीच स्नेह और विश्वास का संबंध होना परम आवश्यक है। गैर लाभकारी बच्चों के साथ स्नेहपूर्ण संबंध स्थापित करते हुए उनके आत्मिक, शारीरिक, बौद्धिक विकास के लिए 'परिचय' की कार्यशैली ने मुझे आकर्षित किया है और पिछले एक वर्ष से 'परिचय' की शैक्षणिक गतिविधियों में जो कुछ भी सहयोग मैं कर पा रहा हूँ वह मुझे विशेष आत्मिक संतोष और प्रसन्नता प्रदान करता है।

–अरूण कुमार दुबे, सामाजिक कार्यकर्ता